फुटबॉल के माफिक किक करेगा आउर सिवाना के बाहर लखेद देगा । एही से कहते हैं कि जब तक पुलिस नहीं आ जाय, जे जहां है तहँ खड़ा रहिये। कोई न भीतर आवेगा न बाहर जाएगा। अटनसन का हालत में खड़ा रह के कानून का मदत करेगा ।

बुलाकी : खबरदार केहू इहां से हिलल डोलत त ठीक ना होई। पाहुन अब दारोगाजी के बोलावे जात बाड़न ।

पाठक : केहू टकसल त मारब अइसन मंतर कि सब केहू माटी के मूरत बन जाई ।

(कोलाहल, ई लोग त हमनी के पूरा फेर में डालल। हमनी के आपन कामधाम ना करीं, एहिजे चुपचाप खड़ा रहीं ।

लोहासिंह : आप लोग अपाना मिजाज का सिंगल डौन नत कीजिये। हम जे कुछ कहता है आपहीं लोग के फैदा का बात कहता है। जे चोरी नांव को चीझ है, उसको ममिला संगीन होखती है। पुलिस के पता लगाना पड़ता है कि चोर है कि चित चोर है, चाई है कि चुहाड़ है। जे चोरी किया उसका नीयत आउर आमद रफत का जांच करना पड़ती है कि चोर किस रस्ता से आया आउर कवना रास्ता से अपना रिटरन टिकस काटा। इसी के चोर का मोडस अपरेंडी बोलता है। आज काल्ह हाई कलौटी के औजार आउर इंजिन से पुलिस का लोग चोर के अंगुरी

आउर पैर का निसान का फोटो ले के चोरी का पता लगाता है। इही से चोर जे ताला तूड़ा, केवाड़ी खोला, बाकस छुआ उसको हम केहू के छूने नहीं देता है। चोर के अंगुरी के निसान पर आप लोग के अंगुरी के निसान पर जाई त पुलिस के चारसीट काटने का जगहा पर पाँच सीट कटा जाई। आउर आपलोग के जाने हम एह से नहीं देता है कि चोर के पैर का निसान आप लोग मिटकार घालेगा।

(कोलाहल ई त गजब बात का ?)

खदेरन : भला सुनब इनकर बोली, चोर जहाँ जहाँ चोरी करी उहाँ उहाँ हिंगलोट लेखा अँगूठा के निसान आउर दसखत करत चली ? आ मार बढ़नी रे, खाली बेलहना के बात बोलत रहलन।

पाठक : जजमानिन, ई बात एकदम सांच ह। बेलमुंड पुरान में जे लिखल बा कि चोर के मुँह में चान अइसन ऊ एही मतलब से लिखले बा। ना बुलाकी सिंघ ?

बुलाकी : तब का ? चनरमा में जइसे दाग रहेला ओइसहीं चोर में दाग रहेला। एही से चोर के दागी कहल जाला।

लोहासिंह : एही दाग का खिसा है कि काबुल के मोरचा पर जब सरजंट चोरी से मेमिन के बोइआम का अंचार खा लिया त मेमिन के बोइआम पर सरजंट के अंगुरी के निसान से पुलिस चोरी का पता लगा दिया आ

मेमिन सरजंट के चिट्ठी लिखा : डोंट टच माई अँचरवा मोहन रसिया।

(हंसी)

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, एही बात पर हमरा खीस बर जाला।

लोहासिंह : पुलिस खाली अंगुरी आउर पैर के निसाने का जांच नहीं करती है हाइ कलौटी के कक्कुर को इस्तेमाल करती है जिसको डौग का डिगरी दिया जाता है। ऊ कुकुर चोर के बौडिस का खासबोच तुरन्त चीन्ह लेता है आउर आते के साथ चोर का नाक हबक लेता है। आप लोग जहां है तहँ रहिये, हम तुरन्त पूरा सरंजाम के साथ पुलिस बोला के तुरन्त चोर का नाक हबकवावेगा।

बुलाकी : (चोखकर) धरिह जा हो। सिताबी संगे चोखा भागल। पुलिस डौंग के न नांवें सुनत दुनो आपन नाक धइले नौ दू एगारह होखे के फेर में बाडेस।

(पकडो पकडो, पकड़ा गइल, मार।)

सिताबी : छोड़ द लोग हम भागत ना रहीं।

अजनबी : नाक छोड़ द नाक में घाव बा। हम सब कहत बानी।

लोहासिंह : हालट, हालट, दुनो पकड़ा गया।

खदेरन की माँ : ले आवत मारी सितबिया के सात बढ़नी। पुलिस के नाँवे एकरा भरसक छनछनहट बरत रहे।

पाटक : चोरवा त संकारते बा कि सिताबी संगे एकरा सांठ गांठ रहे जेया से।

(मार-मार)

लोहासिंह : हालट, कनून के हाथ में नत लीजिये। दुनो के बान्ह के रखिये। हम तुरन्त पुलिस बोलाता है।

खदेरन का माँ : रउआ बुलाकी भाइया आउर पाठक जी संगे जाईं, हम बानी न, केहू के एहिजा से टकसे ना देब।

लोहासिंह : चाबस। पुलीस के इनकौरी में मदद करके चोर पकड़वाने बालो बटैलियन, रेडी, अटेनसन, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट।

(पर्दा गिरता है)

मूल्य वृद्धि रोकिये

खदेरन की माँ : भगजोगनी, आ मार बढनी रे। तोरा आँख में धूर झोंके के एगो हमहीं मिलल बानी ? ऊ कहलन कि जरूरत के कवनो चीझ पर दाम बढ़वै ना करी आ चार दिन से पइसा अधिका ले जात बाड़िस आ जिनिस कम ले आवत बाड़िस।

भगजोगनी : त घुमा के काहे बोलत बानी, सोझे कहीं कि हम चोरिनी हई। जब बिसवासे नइखे त हमरा से कवनो चीझ बाजार से नत मंगावल करीं। हं नाहीं त।

खदेरन की माँ : देखब एकर अइंठल ? तें बजार से सयदा ना ले अइबिस त का हम तोरा के पूजा करेके रखेले बानी ? बाकि बात कहीं साफ हम सब चीझ के

भाव जानत बानी, कवनो आँख मूंद के घर में बइठल ना रहीं, पइसा लटपट कइलू त एको बढ़नी मुइयां ना मिरी। ऊ कहलन कि दाम ना बढ़ी आई सुनावले कि सभ चीझ के महँग हो गइल। आ मार बढ़नी रे?

मगजोगनी : दोकाने दोकान हम न घूमत बानी। बजार के हाल मलिकार का जानी? इहै भाग मनाई कि अधिको दाम पर किरासन तेल मिल जात बा। लड़ाई के जवाना बा, सभ चीझ में आग लगा गइल बा। बिसेसर के दोकान पर गइलीं त सांझे नहकार देलन, छेदियो कहलन कि माले नइखे, त जाके विरंची इहां एक आना अधिक देला पर मिलल। उहां पूरा खुसामद कइलीं तब देलन।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, झूठ बोलत एकरा तनिको अबेर लगोला? बिसेसर इहाँ का त तेले नईखे। बिसेसर इहाँ नाहियों त पचास टिन तेल धइल बा।

मगजोगनी : त एकर माने त इहे भइल कि हम झूठ बोलत बानी? दाम बढ़ा के रउआ से पइस झटक लेत बानी?

खदेरन की माँ : ढेर बकबक मत कर। अन्हार भइल। हाली ललटेन बार। आ मार बढ़नी रे, हम अइसे ना छोड़ब। आवे द उनका के, देख आज कइसन महाभारथ मचाईला।

लोहासिंह : खदेरन को माई। आज घर में पूरा बिलैक आउट का सीन सिनीयरी लउकता है। भगजोगनी के

तुम अन्हार में हवाई हमला का ट्रेनी देता है का ? अन्हरिया मारे काहे किया ?

खदेरन की माँ : भगजोगनी से पूछीं ? एकरा मारे अब अन्हार में त रहंही के परों।

लोहासिंह : कारे भलजोगनी, का बूझती है तुम्हारा माफिक सबके अन्हार में देखने का परावटिस त है नहीं। तुम कतनो है त भगजोगिनियें है, कवनो गैस त है नहीं। हाली लैंटरी बारो। अबहीं हमको बहुत जरूरी कारज है।

भगजोगनी : ललटेम त हम बारिये देव बानी बाकि मलिकार, मलकाइन हमरा के किरासन तेल के दाम के ओजह से बड़ा अछरंग लगावत बाड़ी, मनते नइखीं कि आज काल्ह सब चीझ के दाम बढ़ गइल बा।

लोहासिंह : मानिये जाय त खदेरन को माई कइसा ? बढ़नी बटैलियन का कप्तान है कि तेल है ?

खदेरन की माँ : त का हम जान छोड़ब ? लड़ाई गोली बरूद से होता कि किरासन तेल के दाम काहें बढ़ी ? खाए पीये के समान के दाम काहें बढ़ो ?

भगजोगनी : रउआ जाके पता लगा लों, सगरो दाम बढ़ गइल बा आ लोग कहता कि आउर बढ़ी।

लोहासिंह : सब केहू के बदलाम नत करो भगजोगनी। सगरो दाम नहीं बढ़ा है न बढ़ेगा। देस में कुछ लोग जरूर बिलेक का मारकिट करने का फेर में है। देस बिल्लेक मारकिट कभी बरदास नहीं करेगा आ जिन

जाना बिलेक करेगी उसको पाबलिग नाक बोल भुरकुस करके पुलिस में हैंडिल करेगी।

खदेरन की माँ : देस खातिर त हमनी के सब कुछ नेछावर करिये देल बानीं। रोपेया देत बानी, सोना देत बानी, मेहनत देत बानी, बाकि ई कवन बात कि नफाखोरों के अधिका दिहीं ? ई त हमनी से न बरदास होई।

लोहासिंह : चाबस खदेरन का माई, बहुत हाईकलौटी के बानी बोलती है बाकि फिकिर नौट, जइसे भारथ के पाबलिक के तैयारी देस के चीन के चना और गरम ठंढ़ा हो गया आउर आन्हीं में जिस माफिक मेमिन के कंटोप उलिटी गइल रहे उसी माफिक चीन के तोप उसी के डेरकन में घूम गया उसी माफिक बिलेकमारकिट का खिलकट करनेवाली का धुरछुक छूट के रही।

भगजोगनी : मलिकार दाम बढ़ला से सब केहू मलकाइन लेखा बड़ा जोर भुनभुनाता।

खदेरन की माँ : भुनभुनाई ना। केहू बिरन्हीं के खोंता में ढेला बीगी त फल भोगी। एह घरी इमदी से देस देस खातिर त सब कुछ अरपन कइलहीं बा, अब ऊपर से नफाखोरन आउर चोर बजारियन के दछिना दियाब ? आ मार बढ़नी रे।

लोहासिंह : मिजाज अप खदेरन को माई, आज होल इंडिया बिलेक मारकिट का बदरेसन दूर करने को तैयार है, इहाँ तक कि व्यापारी लोग भी अलपीन करता है कि भाई लोग बिलेक मारकिट बिजनैस नहीं बैमानी

है। चोर बजारी करना देस के धोखा देना है। गोरमंट जरूरत के चीझ पर दाम बढ़ानेवाली के हुलिया डैट करने का पूरा इंतजाम किया है पाब-लिक अलगे नकली महंगी ले आनेवाली पर ताल ठोंक के तैयार है। इस टैन देस का बरखिलाफ जे कारज करेगा उसको उड़िस का माफिक चुटकी में मिस घालेगा।

खदेरन की माँ : त हाथ पर हाथ धर के बइठला से होई ? हम कबनो चीझ अधिका दाम देके ना कीनब ई इयाद रखीं।

भगजोगनी : हं मालिकार, हाली एकर उपाह करीं। महंगी भइला से गरीब त बेमउअत मइबे करिहें मलकाइन त हमरा के भिरिए के खा जइहें। खेत खाय गदहा मार खाये जोलहा वाला खिसा भइल बा। नफा करस चोर बाजारी आ बात सुनस भागजोगन।

खदेरन की माँ : त का चोरबजरियन के हम जान छोड़ा ? दोकान में जाके ऊ लोग के मुंह में करिखा लपेट देब। तू हमरा के बूझत का बाड़िस ? कहवां हमार बढ़नियां ? तनी दिहे त।

लोहासिंह : हालट खदेरन की माई ! लब फरंट पर खाली बढ़नी फिकेसन से फतह नहीं होखता है। ई नत बूझो कि हमारा होम फरंट का रगरूट चुप बइठा है। हमलोग मारकिट का टंपरेटर के पूरा इनकौरी करता है अबहीं दोकानदार आउर खरीददार अपाना दिमाग का पंजा लड़ावेगा आ जरूरत का चीझ के दाम बढ़ाने वाली बिलेक मारकिट का बाइकाट करेगा।

भगजोगनी : बुलाकी मालिक त नावें लेत आ गइलन।

खदेरन की माँ : आज काल्ह चउबीस घंटा बुलाकी भैया के कान्हा में बिगुल झुलते रहता।

बुलाकी : हाला नत कर लोग, जरूरी काम के बात करे के बा।

लोहासिंह : बोलो माई डियर बुलाकी। बोलो मन, इनकौरी कानपलीट हो गइल।

बुलाकी : हं पाहुन. पूरा पता लाग गइल। किरासन तेल में, कपड़ा में, आउर जरूरी चीजन में कुछ दोकनदार दाम बढ़वले बाड़न। कुछ लोग एह भैरोसा पर माल लुकवले बा कि महंगी आई तब निकालब। छेदी आउर बिसेसर खास करके माल गोदाम में लुकवले बाड़न। सब जवान तैयार बाड़न। चल दोकान घेरवा लेबे के। कह त थाना दउड़ीं।

खदेरन की माँ : बिसेसर की भगिनी हमरा से काल्हैं कहलस कि अगना छोड़ के राते रात पचास टिन किरासन तेल लुकावल गइल ह।

भगजोगनी : छेदी इहाँ लोग मने मने गाजत रहे कि कुछ दिन लड़ाई रह गइल त चरमहला उठा लेब।

बुलाकी : सब से जुलुम त बा कि अधिका नफा के फेर में कुछ लोग दवाई दबा के रख देले बा। सनीचरी हरमुनियां के बेरामी के सुई खोज के हार गइल, कतहूँ ना मिलल। जब दोबरी दाम देलस तब जाके ओकरा दवाई के दरसन भइल।

लोहासिंह : आउर मिटिन के बारे में का भइल?

बुलाकी : छेदी के छोड़ के सब दोकनदार लोग आवे के तैयार बा। गाँव के लोग कहल ह कि बिगुल सुनते चहुँप जाइब। बजाई ?

लोहासिंह : बजाओ पूरा फेंफड़ा के तागत से आ कुछ जवान को फिरट लोग का गोदाम पर चोकसी खातिर भेज दो।

बुलाकी : तुरंत। जात बानी कुछ लोग के तैनात करके बिगुल बजावे।

खदेरन की माँ : लोग एहिजे आई' रे भगजोगनी, दरी बिछा दे।

भगजोगनी : जी अच्छा।

(बिगुल—कोलाहल, आवाजा, बहठ, एने काफी जगह बा, पूरा जकसन बा कि, बइठ, धक्का धुकी मत कर जा।)

लोहासिंह : आइये, आइये, बइठिये, आप लोग अपाना तसरीफ के टोकरा रखिये। दोकानदार लोग खरीदार लोग से अलगे से अलगे काहें बइठती है? सब केहू मिल के बइठिये। आज भारथ में सब केहू एक है। हम सब केहू भारथ माई के गोदी में एक साथ खेलने वाला लइका माफिक है, हमारी दिल के डिब्बा मिल गई है। आज केहू केहू से फरक नहीं, जिस माफिक चाह में चीनी आउर दूध मिल जाती है उसी माफिक अमीर गरीब दोकनदार खरीदार सब केहू कान्हा से कान्हा मिला के भारथ का डबल दुस्मन चीन का बरखिलाफ, उस चीन का बरखिलाफ जे हमारा सिवाना पर

चिल्होर का माफिक झपट्टा मारती है, बहरूपिया का माफिक भेख बदलती है, हमलोग तैयार हैं। जब तक चीन भारथ का सीवाना से भाग नहीं जायेगी, हमलोग केहू चैन नहीं लेगा।

(आव अलगे मत बइठ, संगे बइठे के भाई, आव, एने चल आव, ठीके बात कहत बाड़न, एक होके बइठे के)

लोहासिंह : बिरादर लोग, इस टैन हमारा बेलमुंड घिरनई का माफिक नाचता है। आपलोग के हम बहुत अरजिट ममिला सिटलमिंट करने खातिर बोलाया हैं। बहुत ताकलीफी को बात है कि जब देस का जवान नेफा आउर लद्दाख का फरट पर जिनगी आउर मउअत से अंखमुदौअल का खेल खेलता है, सउंसे देस दिन रात काम करके देस को हर तरह से तैयार करता है। उस टैन कुछ लोग जरूरत के चीझ का दाम काहें बढाता है ? दाम बढ़ा के अपना नांव देस दरोही आउर जयचंद के लिस्ट में काहे लिखाता है ? बिलेक मारकिट काहें करता है ? आप लोग अपना ओनियन दीजिये। भारथ बात से फैसला करने खातिर तैयार है आ नहीं त बंदूक से फैसला करने को भी तैयार है। चाहें बाहर के दुस्मन होखे या भीतर के। जवाब दीजिये ?

बुलाकी : पहिले दोकनदारे भाई लोग आपन राय देस ?

(कोलाहल)

दूकानदार : मैं पहले ये बताऊं कि दाम बढ़े है कैसे ? दाम यू बढ़े है कि माल की सपलाई जब कम हो जावे है, और माँग ज्यादा हो जावे है, तब दाम ऊपर को जावे है भाइयो।

लोहासिंह : सपलाई त कम नहीं है। परडकसन दनदना के चल रहा है।

बुलाकी : अबकी रबी खूब भइल, खरीफ के फसल भी निमने बा। अनाज के भाव काहे बढ़ी ?

दूकानदार : खाली अनाज कोई बात नहीं है। कुछ माल बाहर से आवे है। फिर मालगाड़ी, मलेटरी के काम में चले है, माल देर से आये है। किरासन तेल में यई दिक्कत है।

लोहासिंह : त हमलोग परतिज्ञा करें कि ऊ चीझ जे बाहर से आता है कम से कम खर्चा करेंगे। तब त दाम नहीं बढेगी ?

बुलाकी : आ जे लोग समान ले आके लुका देत बा उनकर का होई ? असल चोरबजारी लोग त मुँह देखाबे अइबे ना कइल ?

दूकानदार : दाम बढ़ने की तीसरी बात ये है, कि दूकानदार पल्ले से घाटा दे तो दूकानदारी काहे को करे। पहले माल जिस रेट पर मिला करे था, अब गोदाम से ज्यादा में मिले है। अपन तो पहले जितना ही मुनाफा लेवे हैं, कंपनी से ही दाम बढ़ा तो अपन क्या करें ?

लोहासिंह : आप लोग मुनाफा कम लीजिये। बिरादर, असल चीझ है देस परेम। भारथ माई जेतना हमारा है ओतने आपको है। आज किसान खेत में अधिका खटता है मजूर मिल में ओभर टैन मारता है, आपिस का बाबू अधिका कलम घिस घिस करता है, काहे? एह खातिर कि देस के जरूरत है, फरंट पर लड़ने वाली बहादुर जवानन के जरूरत है। हम लोग जान पर खेल के परडकसन का उतपादन बढ़ायेगा, बिदेसी चीझ का कम से कम इस्तेमाल करेगा। सब केहू भारथ माई का चरन पर अपाना मस्तक चढावने के तैयार है आपलोग अपाना नफा के कमीसन का रेट घटाइये।

दूकानदार : कुछ कुसूर खरीदारों का भी है। गाँव में जिनके पास आजकल कुछ ज्यादा पैसा आवे है, टिन का टिन तेल खरीद के रख देवे हैं।

बुलाकी : ई ठीक कहत बानी। बेलास सिंघ के पांच गो लइका फरंट पर बाड़न, पूरा मनिआडर झरझरात हन। खरचा के सुध नलहिन

लोहासिह : पाबलिग को न एह उमेद में अधिका कीनना चाहीं कि आगे चीझ मिलबे ना करी आ दोकनदार के चीझ लुकाना चाहीं कि दाम बढ़ेगा तब बेचूँगी।

(बोलिये खखार के)

दूकानदार — लोहाबाबू, देश बना रहे तो हम दूकानदार भी बने रहेंगे। हममें देश परेम कम नहीं है। देश

जितना थारा है उतना म्हारा है। हम मुणाफा कम से कम लेंगे। जरूरत का सामान का लिस्ट बनाकर, दाम के साथ सब दूकान पर टांग देंगे। भारत के दूकानदार किसी से पीछे नहीं। जान रहते हम दाम नहीं बढ़ने देंगे, अगर जनता साथ दे और माल की सपलाई बनी रहे। अब रह गई चोरबजारियों की, तो भैया बेईमानों से तो भगवान ही समझे। क्यों दूकानदार भाइयो ?

बुलाकी : पाहुन व्योपारी लोग त ठीक हो गइल बाकी चोरबजारियन के असही छोड़ देब।

(हम दाम नहीं बढ़ने देंगे, कभी नहीं।)

लोहासिंह : चोरबजारी सब के गिलिफदार करके हमलोग सतेआनास बोला देगा। बुलाकी बिगुल बजाओ, अब हीं चोरबजारी सब के हमलोग पुलिस में हैन्डिल करेगा। रेडी, बिलैक मारकेट का हुलिया टैट करनेवाली बटेलियन, फारवर्ड मार्च। लेफ्ट राइट, लफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट।

(पर्दा गिरता है)

चौदह कराट सोना

(सोना बाबू जो गाँव का पुराना रईस है स्वर्ण नियंत्रण की बातें सुनकर घबरा गया है । इसी सम्बंध में लोहासिंह से राय लेने आया है । खदेरन की माँ, बुलाकी सिंह और भगजोगनी उसे समझा रहे हैं ।)

सोना : खदेरन बबुआ के माताराम, हमरा तीन दिन खइला पियला हो गइल । चारों देने अन्हार लउकता । पानी ! पानी ! पानी ।

खदेरन की माँ : धिरजा धरीं सोना बाबू, ऊ अइहें त उहे सब फरिया के बतइए हें । आ मार बढ़नी रे, एक न एक कलकान लगले रहता । अब का त सोना पर सरकारी कबजा हो जाई !

भगजोगनी : भला सोना बिना इमदी कइसे जिही ?

सोना : जब लछिमिये रूस जइहें त जी के का होई?...पानी! पानी ।

बुलाकी : भगजोगनी, गिलास लोटा से इनकर काम ना चली, सउँसे घइलवे रख दे। सोना छिनाये के डरे तरास लेसले बा, डाँक लाग गइल हइन।

खदेरन की माँ : अइलन त, हउका फाटक बाबा संगे एनही आवत बाड़न। (बाहर के द्वार की ओर देखकर)

सोना : हे भगवान अइसन बात सुनावस कि सोना के ईटा बांच जाव। घर के लछमी बाहर नत निकलस।

बुलाकी : सोना बाबू हमार मानीं त गते घसक जाईं। पाहुन रउआ के देखत लगिहें भंम्होरे। ओह दिन देस खातिर सोन के बंड कीने के कहाइल त लगलन कनून बतिआवे। आज अपना पर परल बा त आइल बाड़न टपटप लोर टपकावे।

सोना : बाबू बुलाकी सिंग, अइसन जुलुम नत करीं।

बुलाकी : ना चुप रहब, हम जानत बानी तूं कइसे सोना जमा कइले बाड़!

खदेरन की माँ : बुलाकी भैया, लगल जरला पर नून छिरके। एक त बेचरऊ अपने बदहवास बाड़न।

सोना : पानी ! पानी !! पानी !!!

भगजोगनी : लिहीं पिहीं। (पानी देती है) एगारह गिलास पानी ई लेके पियलन। करेजा में हदस अमा गइल हइन।

खदेरन की माँ : सोना चीझे अइसन ह। हमनी लेखा महमूली

Chandan

इमदिन के सोना खातिर जीव जाये लागेला इनका पर त जनुक छछात लछमी जी असवार बाड़ी ।

(लेफ्ट राइट करता लोहासिंह पाठकजी के साथ आता है ।)

लोहासिंह : आइये फाटक बाबा । बइठिये । खदेरन को माई, तुम अपाना पूरा पलाट्टन का साथ मुंह लटका के काहे बइठा है ? मिजाज अप । अपाना चेहरा का देवाल से सन बासठ का कलैंडर का माफिक उदासी उतार के बीग घालो आउर नया जोस आउर बुलन्दी का साथ सन् तिरेसठ का कलैंडर जगमगाओ । गनतन्तर दिवस के जे परतिज्ञा किया से भुला गया ? का सकलप किया इयाद है ?

पाठक : जम्बू दीपे भरत खंडे सन तिरेसठ ईसवी नाम संकल्पम् करिस्यामि गणतंत्र दिवसाय च । देस खातिर धन देब, सोना देब, जान देब दुस्मन के भगाय देब रच्चे माचल माचल ।

लोहासिंह : गनतंतर दिवस का क्या कमालियत के सीन सिनियरी था । क्या फास्टियर बाताबरनन था । नीला असमान में सान का साथ तिरंगा लहराता था, बुलाकी बिगुल बजावता था, ग्राम सेना आइज राइट मार के झंडा के सैलूट दागता था, आउर जन-गन-मन के बाद, हम फारवर्ड मार्च वाला भाखन देता था, कि भाई फारवार्ड मार्च, आउर बहिन फारवार्डमार्च, जवना आजादी के गाछ, गान्हीं बाबा रोपा उसको हम अपाना खून से सींचेगा फारवार्ड मार्च, अपाना देस

के गनतंतर के लालटेम आन्ही आउर तूफान में जरवले रखेगा फारवर्ड मार्च। लड़ाई भा नो लड़ाई, फिकिर नौट, हम लोग अपाना देस के तरंकी का परोगिराम, डबल स्पीड में चालू रखेगा फारवार्ड मार्च आउर कबो मिजाज का सिंगल डौन नहीं करेगा फारवर्ड मार्च।

पाठक : काहे जजमानिन, जेबा से केहि कारन चित्त में चिन्ता समानी ?

लोहासिंह : आ हऊ के है, हउ जिसको मगज पर एह जाड़ा में भगजोगनी पंखा हउंकती है।

पाठक : देखे सुने में जजमान उहो आदिमिये लेखा बुझात बाड़न। सोना बाबू त ना हवन जेबा से ?

बुलाकी : उहे हवन, जब से सुनले बाड़न कि गौरमिन्ट सोना पर कंटरौल कर देलस गर्मी फूँकले हइन। बड़ा दांत में सोना मढ़ा के सोना के बंक लपेटल, पान के गिलौरी गलफर में जांत के कचरन रहन, अब बुझाता आटा दाल के भाव।

खदेरन की माँ : एह बेचरऊ पर विपत परल बा त तोहरा दिलग्गी सूझता। आ मार बढ़नी रे, तोहार ई कवन लूर ह बुलाकी भैया ?

भगजोगनी : एक घंटा से मलिकार, ई रउरे असरा में बइठल बाड़न। ई बड़ा फेर में परल बाड़न।

लोहासिंह : मिस्टर सोना, अब तुम हौलइण्डिया से आउट आफ डेट हो गया। हाली आपाना नांव चेंजर करो। अब सोना से जबाना लद गई।

पाठक : अर्चभागतः स्वाहा आउर सोना रखे बउराहा जेवा से।

खदेरन की माँ : सोना बाबू के तीनो मेहरारू इनका के घर से निकाल देले बाड़ीस । इनकर कवनो अकिले नइखे चलत।

लोहासिंह : ठीक किया, सोना के अब सब केहू अपाना घर से गेटआउट करेगा।

सोना : लोहाबाबू, हमार नांव मझधार में परल बा, कसहूँ पार लगाईं। छब्बीस जनवरी के रउआ सब केहू से परतिज्ञा करवलीं कि देस के सब के तरक्की होई इहाँ सोना के कनतोड़ हो गइल ई तरक्की भइल कि आफत आइल? हमार तीनों मेहरारू कहत बाड़ी सन कि घर में जतना सोना के ईंटा बा सब के गहना बनवा द नाहीं त खाहीं के ना देब। गहना बनावे में सुनत बानी कि किसिम-किसिम के कनून निकलल बा। तुरन्त कुछ ना करीला त तीनो मउगी सोना आपुस में बाँट के नइहर भाग जइहसन हम तकते रह जाइब।

लोहासिंह : हालट हालट, अपाना हौलदिल के फुलिस्टौप बोलो।

देखो मिस्टर सोना बाबू। हाई कलौटी का उपाह ई है कि तुम्हारा पास जेतना सोना है सब के धड़ाक दे गौरमिन्ट के अबकारी डिपाट में डिकलरेसन मारो। उसको बाद सब सोना के बंड कीन लो। सोना का बंड के फोटो का माफिक फरेम में मढ़वा

के अपना तीनो जनाना लोग के नरेटी में नकलस का माफिक लटका दो।

पाठक : जेबासे एक ढेला में दू सिकार। गहनों के सवख पूरा हो जाई आ हथिकड़ियो लागे के नौबत ना आई।

सोना : सुनत न बानी खदेरन बबुआ के माताराम ! ई त हमार जहाजे डुबा देबे के फेर में बाड़न। हम इहे उपाह पूछे आइल रहीं ?

बुलाकी : नाहीं, तोहरा के गौरमिन्ट के आंख में धूर झोंके के उपाह बतावल जाव तबे सोहाई। हद्द हो गइल भाई, एह देस में कवनो नीमन कनून बनी त लोग घुरची काट के ओह कनून के तूड़े खातिर हाथ धोके पाछा पर जइहें।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, अब अइसन जबाना आ गइल कि हार, हैंकल, हुमेल आ नकलेस के जगहा पर मेहरारू के गरदन में सोना के बंड मढ़वा के लटकावे के परी ? आकाजी, खदेरन के बियाह में दुलहिन के सोना के गहना ना चढ़ाइब का ?

भगजोगनी : खदेरन बबुआ के बियाह में पांच थान सोना के गहना त हमहीं लेब। हम ढेर दिन से असरा लगवले बानी। देखत न बानी मलकाइन ? मलिकार गहना के नांव सुन के दोसरा देने ताके लगलन।

खदेरन की माँ : लड़ाई के बेरा हम आपन सब गहना दान कर देलों बाकि फिर हमार सब गहना बनवावे के परी।

भगजोगनी : बिना छत्तीसो अभरन के मेहरारू ना सोभे मलकाइन।

खदेरन की माँ : छूंछे गरदन त लइका के मतारी के पानी ना पिये के बाकि इनका मारे हम सब कुछ देस के नांव पर निछावर कर देलीं। सोना सोहाग-सिंगार के चीझ त हइए ह मेहरारू खातिर भारी सहारो ह, कौनो भीर सकेता पर जाय त सोना के गहने काम आवेला।

भगजोगनी : मालिकार रउआो नरेटी में सोना के बंड के फरेम फोटोलेखा लटकइहैं, हम बूझ गइलीं मलकाइन।

खदेरन की माँ : खदेरन के माई असहीं चुप बइठे वाली ना हई। लड़ाई भर चुप बानी, ओकरा बाद इनका गहना बनावहीं के परी। बनवाइब कि ना? आ मार बढ़नो रे, सुनते नइखन।

लोहासिंह : दूनो कान खोल के सुन लो नहीं, नहीं, नहीं, कभी नहीं।

खदेरन की माँ : खदेरन के बियाहो के बेरी सोना के गहना ना कीनब?

लोहासिंह : उस टैन हम सोना के बंड कीन के परजंट करेगा जिससे हरमेसा हाइकलौटी का डबल सूद मिलेगा।

भगजोगनी : देखलीं, कहत ना रहीं?

खदेरन की माँ : त खदेरन के माई चलली नइहर। चल रे भगजोगनी।

भगजोगनी : चलीं।

बुलाकी : सोना बाबू, अपना घर के झगरा तू एह घर में चहुँपा देल। सोना चीझे खराब हऽ।

पाठक : सोना के लंका रवना बनवलस त हनुमान जी एही से न जरा देलन। सोना के मिरगा देख के सीता जी न लोभइती त सीता हरन न होइत। सोना बड़ा खराब चीझ ह, हो रह जजमानिन।

लोहासिंह : अपाना टंगरी आउर नरेटी दुनो के अटनसन मारो खदेरन को माई। जवना सोना के गहना खातिर तुम एतना छान पगहा तुड़ावती है जानती है ऊ सोना औरत का सबसे भारी दुस्मन है।

पाठक : सुन जजमानिन जजमान सोना पुरान के सतवाँ अधेयाय खोलले बाड़न।

लोहासिंह : आज औरत के इज्जत नहीं है सोना के इज्जत है। जे मेहरारू दहेज में सोना के गहना कम ले आवती है उसको इज्जत घट जाता है।

खदेरन की माँ : इज्जत ना जे कपार घट जाला ?

भगजोगनी : सोना से इज्जत बढ़ेला कि।

लोहासिंह : सोना जनाना के गुलामी के निसानी है। बिलाइत का मेम तुम लोग से कम सौखीनी के सैनबोट देखाता है बाकि हम कवनो मेम आउर मेमिन के नहीं देखा जे भारथ का जनाना का माफिक अपना होंठ बौडिस में सोना के सिक्कड़ लगा के जेहल का कैदी का माफिक अपाना हेल्थर चउपट आउर हुलिया टैट कराले। तुम लोग गनतंतर दिवस के परितिग्या किया कि देस खातिर अपाना सवारथ तेयागन करेगी। आज देस के सोना के जरूरत है लड़ाई के औजार खातिर

बिदेस से व्यौपार खातिर उस टैन नरेटी में आउर नाक में आउर कान में सोना लटका के तुम लोग देस दरोह करेगा ? जानता है देस में सकड़े अस्सी परसंट सोना गहना के रूप में बेकार पड़ा हुआ है। हर साल इस मुलुक में तीन सै करोड़ का गहना कीना जाता है।

सगजोगनी : तीन सै करोड़ ?

खदेरन की माँ : आ मार बड़नी रे, बुझाता तीन सै करोड़ केतना होला ?

सगजोगनी : एक दउरी से कम नहीं होई।

लोहासिंह : जब सब सोना के गहने बनी त बाहर से व्यौपार कइसे होखी ? दस में नौ इमदी अलचारी सादी बियाह में देखावा खातिर सुसैटिक में ऊँचा बनने के खातिर गहना दबाब में पर के कीनता है, देस के तरंकी खातिर घर से सोना बाहर निकालना जरूरी है, सोना के गहना के रेवाज कम करना जरूरी है ! एही से गौरमिन्ट सोना कंटरोल किया आउर १० जनवरी १९६३ से कनून किया कि केहू १४ करंट से अधिका सोना के गहना नहीं बनवायेगा।

पाठक : १४ करंट ठीक से बूझल लोग जेबा से। पहिले १८ से २२ करंट के सोना के गहना बनता था जिसमें २ से ३ तीन हिस्सा तामा का कनकसन था, १४ करंट में ६ से ८ हिस्सा तामा रहेगी। देस में ४१ सौ करोड़ रोपया का सोना है बाकि बहुत आप-

सोस के बात है कि अबही तक एके लाख रोपेया का बंड बिकाया है।

बुलाकी : बाल रे बाल, ई बैमानी।

लोहासिंह : बहुत सोना के ईंटा तहखाना में दबा हुआ है, उसको बाहर निकालना है।

सोना : पानी पानी।

बुलाकी : ना चुप रहब। ढेर पनिअइलऽत उठाके पटकिये देब।

लोहासिंह : देस का एडभंटिज खातिर अपाना सवारथ छोड़ना है। जवना इमदी का सवारथ देस के सवारथ से डिफरेंट है ऊ देसदरोही है। जे गहना देस के तरंकी में सबसे डबल रुकावट है, जे सोना के गहना सैंकड़न घर बरंबाद किया, मेहरारू के जिनगी तबाह किया, जिसको घर में रखने से चोरी का खतरा हरमेसा बनल रहता है उस सोना के गहना तुम अबो बनावेगा ? बोलो ?

बुलाकी : पाहुन, हम बिगुल बजा के गांव के लोग के बोलावत बानी। सोना के बारे में गांव के लोग के बतावल जरूरी बा।

लोहासिंह : जरूर, फौरन बिगुल बजाओ, हम सोना का बोखार जब ले नहीं छोड़ा लेगा तब ले सोना हराम है।

(बुलाकी बिगुल बजाता है)

खदेरन की माँ : ई बतिया रउआ पहिलहीं कहती त हम काहे झगड़ा करतीं। गहने पेन्हे के सवख होखी त इमदी चानी के पेन्ही। जब सोना के देस के जरूरत